Hindi

هندي

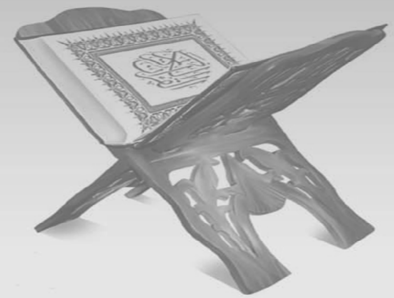

هذا هو الإسلام

इस्लाम यह है

लेखक

ईबराहीम अल यहया

ly1001@hotmail.com

अनुवादक

मोतीउल हक मद्नी

संशोधक

अबु ताहिर मोहम्मद युसूफ रियाज़ी

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بحي البشر - ببريدة

هاتف: ٠٠٩٦٦٦٣٨٥١٠٠٥ - فاكس: ٠٠٩٦٦٦٣٨٥١٠٠٤

رقم الحساب: ١٩٢٨٠٦٠١٠٠٦٠٠٠٠ - فرع:١٩٢

संघीय कार्यलय आमन्त्रण व प्रदर्शक अल बिश्र बुरैदा

Tel: 009666 3851005 - Fax: 009666 3851004

Account No: 19280601006000

१. इस्लाम यह है कि : आप इस बात पर आस्था रखें कि संसार और इसमें उपस्थित सम्पूर्ण वस्तुओं का जन्मदाता वह अल्लाह है जो अकेला है, उसका कोई साझी नहीं है, वह आकाश में है, अपनी सम्पूर्ण सृष्टि को देख रहा है और उनकी बातों को सुन रहा है। वही आराधना का हक़दार है और आप उस के सिवा दूसरों की आराधना छोड़ दें और इस बात पर विश्वास रखें कि अल्लाह ने किसी भी वस्तु को बेकार पैदा नहीं किया है बल्कि उन्हें सिर्फ अपनी आराधना के लिए पैदा किया है, परलय के दिन हिसाब व किताब के लिए पुनः जीवित करेगा और उनके करतूतों का हिसाब लेगा।

२. इस्लाम यह है कि : आप इस बात पर आस्था रखें कि देवदूत मनुष्य से भिन्न हैं, उनको अललाह ने प्रकाश से पैदा करके उनको कामों की जिम्मेदारी भी सौंपी है। उन्हीं में से हजरत -जिब्रईल- भी हैं, उन्हें संदेष्टाओं पर ईश्वाणी पहुचाने की ज़िम्मेदारी सोंपी गई है।

३. इस्लाम यह है कि : आप इस बात पर विश्वास रखें कि अल्लाह ने संदेष्टाओं पर तौरात, ज़बूर और इन्जील जैसी पुस्तकें अवतारित की हैं, कुरआन अन्तिम ईश्वरीय ग्रन्थ है जिसे अल्लाह ने अपने अन्तिम संदेष्टा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतारा है, यह सम्पूर्ण पुस्तकें एक अल्लाह के उपासना का उपदेश देती हैं। कुरआन के सिवा सभी किताबों में अधर्मों द्वारा परिवर्तन स्पष्ट है, अन्तिम संदेष्टा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अवतारित कि गई किताब कुरआन ही सिर्फ एक ऐसी ईश्वरीय ग्रन्थ है जिसकी सुरक्षा की ज़िम्मेदारी अल्लाह ने स्वंय ली है, लोगों ने इसे अपने हृदय में कण्ठस्थ करके सुरक्षित रखा है, मनुष्य के लिए अल्लाह ने इसे चमत्कार बना दिया है और सम्पूर्ण पुस्तकों को साबित करने वाली है और इस में बहुत सारे चमत्कार और अत्याधिक ज्ञान हैं जिसको इस युग के विद्वान तथा महान वैज्ञानिकों ने स्वीकार किया है!

४. इस्लाम यह है कि : आप इस बात पर आस्था रखें कि हजरत आदम (अलैहिस्सलाम) मानव जाति के पहले पुरुष हैं उन्हें अल्लाह ने मिट्टी से पैदा किया है, उन्हें संतान प्रदान कि और परीक्षा लिया, शैतान के बहकावे में आकर लोगों ने अल्लाह को छोड़कर दूसरी वस्तुओं कि पूजा शुरू करदी तो उनकी

मार्गदर्शन के लिये अल्लाह ने संदेष्टाओं को भेजा (नूह, इब्राहीम, मूसा, ईसा ..) उन सभी के अन्तिम में मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को आखिरी संदेशवाहक बना कर भेजा। सभों ने मात्र एक अल्लाह की उपासना, सम्पूर्ण संदेष्टाओं की अनुकरण और दूसरी तमाम वस्तुओं की आराधना से रोका है! जब तक कोई भी व्यक्ति सम्पूर्ण संदेशवाहकों पर आस्था नहीं रखेगा उसका इस्लाम दुरुस्त नहीं होगा।

५. इस्लाम यह है कि : आप इस बात पर आस्था रखें कि संसार में जो कुछ भी हो रहा है सब पहले हि से भाग्य में लिखा जा चुका हैं। मनुष्य को माध्यम अपनाने का आदेश दिया गया है, वह लोक और परलोक में स्वंय अपने कर्तब्य का ज़िम्मेवार है। माध्यम और कार्य को छोड़कर भाग्य को एक प्रमाण बनाकर बैठना दुरुस्त नहीं है। यह आस्था मनुष्य को एक सन्तुष्ट जीवन प्रदान करता है।

६. इस्लाम न्याय,सच्चाई, भलाई, पाकदामनी, सम्पूर्ण अच्छी विशेषताओं तथा उच्च व्यवहार एवम् नाते रिश्ते को जोड़ने का आदेश देता है। अत्याचार, व्यभिचार, चोरी, धोकाधड़ी,बलात्कार,उढण्डता,गुण्डागर्दी,दूसरोंपर अत्याचार, बेगुनाहों की हत्या, झूट, एक दूसरे पर घमण्ड करना, बुरी विशेषताओं और दुष्टब्यवहारों से रोकता है। और कुछ मुसलमानों से जो गलतियाँ हो जाती हैं उसके ज़िम्मेदार वह खुद है न कि इस्लाम!

७. इस्लाम काले,गोरे,धनी,निर्धन,अरबी,अजमी, के बीच कोइ भेद-भाव नहीं करता है। अल्लाह के पास सब से वरिष्ट व्यक्ति वह है जो सब से अधिक अल्लाह से भय रखने वाला है!

८. इस्लाम हमेशा तौबा (प्रायश्चित) का आदेश देता है! जिसने कोइ पाप किया फिर उस पर लज्जित हुआ, पाप को छोड़ कर तौबा किया और मनुष्य के हक को अदा कर दिया है तो अल्लाह उसे क्षमा कर देता है। और उस के उस तौबा के बीच कोई बाधा नहीं, क्योंकि यह तौबा उस के और अल्लाह के बीच है जो उसे देखता है, उसकी बातों को सुनता है और उस के दिल की कोई भी बात अल्लाह से गुप्त नहीं है!

९. इस्लाम सफाई सुथराई का आदेश देता है। किसी भी सफाई सुथराई का उपदेश देता है। किसी भी जगह कोई प्रदूशण हो तो उसे हटाने और कष्टदायक तथा हानिकारक वस्तुओं को दूर करने का आदेश देता है!

१०. इस्लाम महिला का सम्मान, खर्च, धन सम्पति में उसका हक उसे देने और उस के साथ अच्छे व्यवहार का आदेश देता है!

११. इस्लाम जिन से मनुष्य के जीवन में सरलता और सहयोग प्राप्त हो उन तमाम अविष्कार कि गई वस्तुओं के प्रयोग का आदेश देता है,जब तक की इस्लाम के नियमों के विपरीत न हो!

१२. इस्लाम के नियम तथा सिद्धान्त बिल्कुल स्पष्ट और सरल हैं, इस की प्रत्येक आराधना पर धार्मिक प्रमाण पवित्र कुरआन अथवा हदीस़ में मौजूद हैं, जिस के अनुसार मुसलमान को जीवन यापन करना है। यह किसी मनुष्य द्वारा बनाया हुवा सिद्धान्त नहीं बल्कि अल्लाह का सिद्धान्त है जिसका प्रत्येक मुसलमान को अनुयायी होना है और उसी की अनुसरण करना है!

१३. इस्लाम सम्पूर्ण अपराध का विरोधी है और अपराधियों को दण्ड देता है ताकि लोगों की प्राण और धन सुरक्षित रहे!इस्लाम पाँच आवश्यक्तापूर्वक वस्तुओं का ज़िम्मेदार हैः बुद्धि, प्राण, वंश, धन और धर्म!

१४. इस्लाम यह है कि दैनिक पाँच नमाजों को उनकी समय में उनकी दुआओं के साथ और उसी तरिक़े से अल्लाह के लिए अदा करो जिसका उसने आदेश दिया है। ताकि तुम अल्लाह से सम्बन्ध जुड़े रखो!

१५. इस्लाम उस व्यक्ति को जो एक नियुक्त परिमाण का मालिक है, अपने माल का एक छोटा सा भाग निकाल कर गरीबों को देने का आदेश देता है, जिसका नाम ज़कात है!इस से धन पवित्र और उस में बढ़ोतरी होती है और निर्धनों तथा असहायों के साथ नम्रता तथा सहयोग होता ह!

१६. इस्लाम वर्ष में एक महिने के रोजे (ब्रत) का आदेश देता है!रोजा का अर्थः प्रात:काल से लेकर सुर्य अस्त होने तक खाने,पिने और पत्नी के साथ संभोग करने से रुक जाना है!इस महिने का नाम रमज़ान है! अल्लाह ने इसका आदेश लोगों को फकीरों की अवस्था जानने,स्वास्थ की सुरक्षा के लिए और भक्त की उपासना को परखने के लिए दिया है!

१७. **इस्लाम** जीवन में एक बार क्षमतावान व्यक्ति को हज का आदेश देता है!हज का अर्थ:इब्राहीम,ईसा,मुहम्मद और दुसरे संदेष्टाओं(उन्हें अल्लाह कृपा तथा दया प्रदान करे)का अनुसरण करते हुए मक्का जाकर विशेष समय में विशेष कार्यों को करना है!

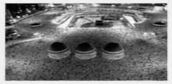

१८. **इस्लाम** इस बात पर विश्वास करना है कि संदेष्टा मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सम्पूर्ण संसार के लिए अन्तिम उपदेशक बनाकर भेजा गया है!सम्पूर्ण संदेष्टा जो संदेश लेकर आए थे वही आप का भी संदेश है, सिद्धान्त में सिर्फ थोड़ा सा अन्तर है!आप(सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर ईमान लाना और आप के आदेश अनुसार जीवन व्यतित करना हर उस व्यक्ति पर अनिवार्य है जिसे आप के आने की ख़बर मिल गई हो!अल्लाह के पास इस्लाम के सिवा कोई दूसरा धर्म सुविकार नहीं है!

१९. **इस्लाम यह है कि** तुम अल्लाह की उपासना तथा पूजा मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लाए हुए सिद्धान्त अनुसार करो,जो कि बुख़ारी,मुस्लिम और दूसरे मुहद्दसीन द्वारा बयान की गई हदीसों में मौजूद है!पथभ्रष्टों द्वारा उत्पन्न कि इजाद करदा बिद्अतों और ख़ुराफातों से बचो जो न धर्म से स़ाबित है और न ही बुद्धी उस बात को मानती है!

२०. **इस्लाम** बुद्धीमान को अंधविश्वास और अल्लाह के सिवाय दूसरों की उपासना से स्वतंत्र करता है!इसी लिए इस्लाम जहाँ भय तथा चेतावनी के लिए कबरों की ज़ियारत (दर्शन)की तरफ प्रेरणा करता है वहीं पर कबरों का तवाफ (परिकमा),वहाँ पर बली देने ,मुर्दों से प्रार्थना करने और उनको वसीला (मध्यता) बनाने से रोकता है!

२१. **इस्लाम** माध्यंम अपनाने के साथ अल्लाह पर पूर्ण विश्वास रखने का आदेश देता है!तावीज लटकाने,जादूगर और ज्योतिषों के पास जाने से मना करता है जो ग़लत तरीके से लोगों का माल खाते रहते हैं!

२२. **इस्लाम** में सिर्फ दो ईदें हैं,ईदुल फित्र और ईदुल अजहा!इस्लाम में उन सारी नई ईदों की कोई महत्व नहीं हैं जिन्हें आज पथभ्रष्टों ने अविष्कार कर लिया है और जो मनगढ़त हैं!

२३. **इस्लाम** अपने अनुयायियों को इस्लामी सिद्धान्त जैसे तहारत (पवित्रता),नमाज, ज़कात,रोजा,हज और व्यवहार इत्यादि के बारे में शिक्षा प्राप्त करने का उपदेश देता है! अब जब तुम इस्लाम धर्म से संतुष्ट और राजी हो गए तो फिर शहादतैन

23: (أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ, وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدا رَسُوْلُ اللهِ) (अश्हदु अल्लाइलाहा इल्लल्लाहु, व अश्हदु अन्ना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह) (मैं गवाही देता हूँ अल्लाह के अतिरिक्त कोई पुजने के योग्य नहीं और मैं गवाही देता हूँ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के दूत है!)का इक़रार करके मुसलमान हो जाओ! और जीवन भर इन दोनों शहादतैन के तकाजों पर अमल करते रहो ताकि नर्क से मुक्ति पाकर स्वर्ग के हक़दार बन जाओ!

२४. **इस्लाम** निम्न अवस्था में स्नान करने का आदेश देता है : १.इस्लाम स्वीकार करते समय २.वासना के साथ विर्य निकलने पर ३. महिला जब हैज व निफास से पवित्र हो जाए!

२५. **इस्लाम**

तुम को नमाज से पहले वजू का आदेश देता है जिसका तरीका इस प्रकार है :

(वजू का तरीका)

१. बिस्मिल्लाह पढ़कर दोनों हथेलियों को पानी से तीन बार धोयें!

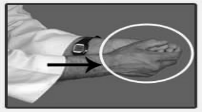

२. तीन बार कुल्ली करें और नाक में पानी डाल कर झाड़ें!

३. अपने चेहरे को तीन बार धोलें!

४. तीन बार पहले अपना दायाँ हाथ फिर बायाँ हाथ को हथेलियों समेत कुहनियों तक धोयें!

५. पूरा सर और कानों का मसह करें, और सर के मसह के लिए नया पानी लें!

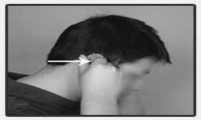

६. तीन बार पहले दायाँ पैर फिर बायाँ पैर टखनों समेत धोयें!

इस्लाम निम्नलिखित तरीके से नमाज पढ़ने का आदेश देता है :

(नमाज का तरीका)

१. क़िब्ला (कअ़बा) रुख होकर ध्यानपूर्वक सीधे खड़े हों और दोनों हाथों को कानों के बराबर उठाते हुए (اللهُ أَكْبَرُ) अल्लाहुअकबर (अर्थ: अल्लाह सब से बड़ा है!) कहें,फिर दायें हाथ को बायें हाथ पर रखकर सीना पर बाँध लें,फिर स़ना और सूरः फातिहा पढ़ें!

(سُبْحَانَكَ اللّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ ، وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالَى جَدُّكَ، وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ)

स़ना:(सुब्हानका अल्लाहुम्मा व बिहमदिका व तबारकस्मुका व तआ़ला जद्दुका व लाइलाहा गैरुक) (अर्थ:अल्लाह तेरी ज़ात पवित्र है,खूबियों वाली है,और तेरा नाम बरकत वाला है,और तेरी शान ऊँची है,और तेरे सिवा कोई पुजने के योग्य नहीं!)

(أَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ , بِسْمِ اللهِ الرَّحْمنِ الرَّحِيْمِ.

अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैता निर्रजीम,बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम!(अर्थ:शुरु करता हूँ अल्लाह के नाम से जो क्षमा करने वाला और दयालू है!)

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ . الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ . مَالِكِ يَوْمِ الدِّينِ . إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ .
اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ. صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِالْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلا الضَّالِّينَ .) آمين.

अर्थ:सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है!जो सम्पूर्ण जगत का प्रभू है!अत्यन्त करुणामय और दया करने वाला,बदला दिये जाने वाले दिन का मालिक है!हम तेरी ही उपासना करते हैं और तुझी से सहायता माँगते हैं!हमें सीधा मार्ग दिखा,उन लोगों का मार्ग जो तेरे कृपा पात्र हुए,जो प्रकोप के भागी नहीं हुए और भटके हुए नहीं हैं! फिर कुरआन से जो हो सके पढ़ें, जैसे सूरः इख्लास पढ़ें :

(بسم الله الرحمن الرحيم , قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ . اللَّهُ الصَّمَدُ . لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ . وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُواً أَحَدٌ .)

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम!कुल हुवल्लाहु अ़हद!अल्ला हुस्समद! लम यलिद व लम युलद!व लम यकुल्लहू कुफुवन अहद!
अर्थ: कहो वह अल्लाह एक है!अल्लाह सब से निरपेक्ष है और सब उसके मोहताज हैं!न उसकी कोई सन्तान है,और न वह किसी की सन्तान!और कोई उसका समकक्ष नहीं है!

२. फिर दोनों हाथों को कानों के बराबर उठा कर الله أكبر अल्लाहुअकबर कहते हुए रुकुअ़ करें और سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ (सुब्हाना रब्बियल अ़ज़ीम) (अर्थ:पवित्र है मेरा महान प्रभू!) तीन बार या इस से ज़ियादा पढ़ें!

३. फिर سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ (समिअल्लाहु लिमन हमिदा) (अर्थ:अल्लाह ने उस भक्त कि बात सुन ली जिसने उसकी प्रशंसा की!) कहते हुए रुकुअ से उठें और दोनों हाथों को कानों के बराबर उठायें और पूरी तरह से खड़े होने के बाद رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ (रब्बना व लकल हम्द) (अर्थ:ऐ हमारे प्रभू तूही हर तरह की प्रशंसा का हक़दार है!) कहें!

४. फिर اللهُ أَكْبَرُ अल्लाहुअकबर कहते हुए सज्दा में जायें और सज्दा में سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى (सुब्हाना रब्बियल अअ़ला) (अर्थ:पवित्र है मेरा महान प्रभू!) तीन बार या इस से ज़ियादा पढ़ें!

५. फिर اللهُ أَكْبَرُ अल्लाहुअकबर कहते हुए उठें और बैठ कर رَبِّ اغْفِرْلِيْ (रब्बिग् फिरली)(अर्थ:ऐ मेरे प्रभू मूझे क्षमा कर) बार बार पढ़ें!

६. फिर اللهُ أَكْبَرُ अल्लाहुअकबर कहते हुए सज्दा में जायें और सज्दा में سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى (सुब्हाना रब्बियल अअ़ला) (अर्थ:पवित्र है मेरा महान प्रभू) तीन बार या इस से ज़ियादा पढ़ें!

७. फिर اللهُ أَكْبَرُ अल्लाहुअकबर कहते हुए दूसरी रकात के लिये खड़े हों और पहली रकात की तरह इस रकात को अदा करें!

८. दूसरी रकात में सज्दा से समाप्ती के बाद الله أكبر अल्लाहुअकबर कहते हुए बैठ जायें, और तशहहुद पढ़ें जो यह है :

(التَّحِيَّاتُ لِلهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ , السَّلاَمُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ , السَّلاَمُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللهِ الصَّالِحِيْنَ , أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ)

(अत्तहियातु लिल्लाहि वस्सलवातु वत्तय्यिबातु अस्सलामु अलैका अय्युहन्नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्ला हिस्सालिहीन्, अश्हदु अल्लाइलाहा इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्ना मुहम्मदन अबदुहु वरसूलुह)

अर्थ:सारी प्रशंसा और नमाज़ें और सारी पवित्रता अललाह के लिए है!ऐ दूत आप पर सलाम हो!और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकत अवतारित हो!सलाम हो हम पर और अल्लाह के नेक भक्तों पर,मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूजने के योग्य नहीं है!और गवाही देता हूँ कि निसंदेह मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उस के बन्दे और उस के दूत हैं!

९. दो रकात वाली नमाज़ हो तो जिसकी विस्तार आगे आरही है पढ़ कर सलाम फेर लें । और अगर दो से ज़ियादा रकात वाली नमाज हो तो पहला तशहहुद पढ़ने के बाद खड़े हो जायें और दोनों हाथों को कानों के बराबर उठाकर वही करें जिनका बयान पहले हो चुका है ।

१०.नमाज़ के अन्तिम में الله أكبر अल्लाहुअकबर कहते हुए बैठ जायें, और तशहहुद पढ़ने के बाद दरूद पढ़ें जो यह है :

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ, كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيْمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيْمَ إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَجِيْدٌ , اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ , كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيْمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيْمَ إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَجِيْدٌ.

अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मदिवँ व अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लैता अला इब्राहीमा व अला आलि इब्राहीमा इन्नका हमीदुम्मजीद, अल्लाहुम्मा बारिक अला मुहम्मदिवँ व अला आलि मुहम्मदिन कमा बारक्ता अला इब्राहीमा व अला आलि इब्राहीमा इन्नका हमीदुम्मजीद, ।

अर्थ:ऐ मेरे प्रभू कृपा कर मुहम्मद पर और मुहम्मद के परिवार पर जैसे कृपा की इब्रहीम पर और इब्रहीम के परिवार पर,निसंदेह तू महिमा और गुणगान के योग्य है!ऐ प्रभू बरकत भेज मुहम्मद पर और मुहम्मद के परिवार पर,जैसे बरकत भेजी इब्राहीम पर और इब्राहीम के परिवार पर,निसंदेह तू महिमा और गुणगान के योग्य है!

११. दुरूद पढ़ने के बाद यह दुआ पढ़ें!

اللَّهُمَّ ربنا آتنا في الدنيا حسنة وفي الآخرة حسنة. اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ ، وَمِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ , وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ ، وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ .

(अल्लाहुम्मा रब्बना आतिना फिद्दुनिया हसनतवँ व फिल आखिरते हसना। अल्लाहुम्मा इन्नी अऊजुबिका मिन अजाबि जहन्नम, व मिन अजाबिल कब्र, व मिन फितनतिल महया वलममात, व मिन शर्रि फितनतिल मसीहिद्दज्जाल)

अर्थ:ऐ हमारे प्रभू हमें पृथ्वी और प्रलैय में नेकी और पवित्रता का जीवन प्रदान कर,ऐ प्रभू तेरी शरण चाहता हूँ नर्क के प्रकोप से,और कब्र के प्रकोप से,और जीवन और मृत्यु के फ़ितने से, और मसीह दज्जाल के प्रकोप से!

१२. इस के बाद दायें जानिब मुड़कर السَّلاَمُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ الله (अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह) (अर्थ:तुम पर अल्लाह की कृपा और शान्ति हो!) कहें, फिर बायें जानिब मुड़कर السَّلاَمُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ الله (अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह) कहें, ।

(नमाज की संख्याँ और समय)

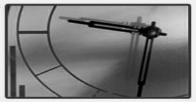

नमाज़	रकअ़तें	समय (समय कि पाबन्दी अनिवर्य है)
फजर	२	सुबह सादिक से सूर्य निकलने तक
जोहर	४	सूर्य ढलने से लेकर हर चीज़ का साया उसके बराबर होने तक
असर	४	किसी भी चीज़ का साया उसके बराबर होने से लेकर सूर्य के पीले होने तक
मग़रिब	३	सूर्य डूबने से लेकर आकाश से लाली गायब होने तक
इशा	४	आकाश से लाली गायब होने से लेकर आधी रात तक

مطابع دار الندوة 3696000